हिन्दी साहित्य

बदलते स्वरूप, परिवेश और प्रारूप

नमूना • SAMPLE

SAMPLE

हिन्दी साहित्य

बदलते स्वरूप, परिवेश और प्रारूप

डॉ. रजनी सिंह

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

नमूना • SAMPLE

द्वारा प्रकाशित

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल–9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

हिन्दी साहित्य
बदलते स्वरूप, परिवेश और प्रारूप

संस्करण : 2019
© लेखक
ISBN: 978-93-88998-52-9

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

नहीं • SAMPLE

प्राक्कथन

आज हम एक ऐसे दौर में सांस लेने को बाध्य है, जहाँ वास्तविकता और भ्रम में भेद करना बेहद कठिन है। मनुष्य अपनी अस्मिता, पहचान तथा अस्तित्व को हर कीमत पर सार्थकता प्रदान करने के लिए वो सब कुछ करने को आतुर है जो उसके वश में है। प्रेम, घृणा, पहचान और सर्वश्रेष्ठता ये कुछ ऐसे बिन्दु है। जिन्हें हासिल करने के लिए आज व्यक्ति हर संभव प्रयास करने को तैयार है। ये पुस्तक आज के गम्भीर समय में मानव और मानवता से जुड़े ऐसे ही अनगिनत प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास मात्र है।

इस कठिन वक्त की सबसे बड़ी समस्या हिंसा बनती जा रही है। हिंसा का विस्तार इतना व्यापक, विस्तृत एवं परिवर्तित है कि उसे किसी एक खाके के भीतर तक सीमित कर पाना बेहद मुश्किल है। आंतकवाद की समस्या हो या साप्रदायिक दंगे हिंसा इनका अभिन्न अंग है। वहीं अपने वर्चस्व को स्थपित करने के लिए भाषिक हिंसा इसका अदृश्य स्वरूप है।

साहित्य अपने भीतर लगभग उन सभी विषयों को समोता गया है, जो समाज में घटित होते रहे है। इस दृष्टि से किताब को चार भागों में विभाजित किया गया है–

सबसे पहले इस पुस्तक में समाज के आधार बिन्दु स्त्री और पुरूष पर बात की गयी है। स्त्री प्रश्न वर्तमान का सबसे प्रासंगिक विषय है। किन्तु यह प्रश्न बिना पुरूष के पूर्ण नहीं होता है। और निश्चित ही पुरूष

SAMPLE

का जीवन भी स्त्री के बिना अपूर्ण है। फिर भी दोनों के बीच वर्चस्व और प्रतिरोध की भावना एक ऐसी गुथ्थी है, जिसे सुलझाना बेहद कठिन है। और इसी का प्रयास इस पाठ में किया गया है।

दूसरे अध्याय का केन्द्रीय विषय साम्प्रदायिकता और उससे जुड़ी गम्भीर समस्या है। इसके अन्तर्गत भारतीय सन्दर्भ में साम्प्रदायिकता का उल्लेख करने के साथ ही हिन्दी साहित्य में इस विषय के महत्त्व का मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है।

साम्प्रदायिकता का दुष्परिणाम का विकराल रूप आंतकवाद के रूप में देखने को मिलता है। अगला पाठ आंतकवाद की विभीषिका पर ही केन्द्रित है। यह पाठ आंतक के व्यावहारिक स्वरूप पर बात करने के साथ उसके मानसिक प्रभाव पर भी बात करता है।

अन्तिम अध्याय समाज एवं साहित्य के एक उपेक्षित विषय समलैगिकता पर आधारित है। इस विषय की संवेदनशीलता पर एक समग्र दृष्टि डालने की कोशिश इस पाठ में की गयी है।

मम्मी–पापा के बाद अगर किसी ने मेरी परेशानियों को मुझ तक आने से पहले ही खत्म करने की मंशा रखी है, तो निश्चित ही वो हमसफर विशाल ही हैं। विशाल के भावनात्मक बल एवं सहयोग के बिना इस पुस्तक को ला पाना मेरे लिए सच में कठिन हो जाता।

शुक्रिया विशाल !

डॉ. रजनी सिंह
गोरखपुर

हिन्दी SAMPLE

अनुक्रमणिका

	प्राक्कथन	*v*
1.	प्रवेशिका	1
2.	स्त्री – पुरुष संबंध : वर्चस्व और प्रतिरोध	26
3.	साम्प्रदायिकताः अर्थ और स्वरूप	71
4.	आतंकवाद : अर्थ एवं सन्दर्भ	116
5.	समलैंगिकता के प्रश्न : साहित्य एवं समाज	147

नमूना • SAMPLE